



एरा में पैलिटिव केयर पर विशेषज्ञों ने किया मंथन

## लाइलाज बीमारियों में संगीत दे सकता है राहत

देश में 80 प्रतिशत कैंसर मरीज की स्थिति गंभीर

लखनऊ (सं)। किसी मरीज को सामान्य दवाइयों से राहत न मिल रही हो। डॉक्टर ने जवाब दे दिया हो। तो ऐसे में पैलिटिव केयर के जरिये मरीज को बेहतर जिंदगी दी जा सकती है। इसमें संगीत के साथ अन्य वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियां शामिल हैं। मंगलवार को एरा यूनिवर्सिटी में एराज लखनऊ मेडिकल कॉलेज और कैंसर ऐड सोसाइटी की ओर से आयोजित दो दिवसीय चौथी अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस ऑफ नेशनल एसोसिएशन ऑफ पैलिटिव केयर फॉर आयुष एंड मेडिसिन में देश विदेश से आये विशेषज्ञों ने पैलिटिव केयर पर अपनी बात रखी।

कार्यक्रम में आए साहे यूनिवर्सिटी तुमकुर कर्नाटक के कुलपति डॉ. केबी लिंगेगोड ने बताया कि जिन मरीजों के इलाज में अंग्रेजी दवाओं की भूमिका समाप्त हो जाए उनको अस्पताल में बेवजह भर्ती कर



हॉस्पिटल पर भार बढ़ाने के बजाय सेल्फ केयर से भी मरीज के जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है। एरा यूनिवर्सिटी के अतिरिक्त निदेशक डॉ. अली खान ने कहा कि मरीज के शरीर के पोषण तत्वों की कमी का पता लगाकर उसकी पूर्ति करने से रोगों में राहत मिल सकती है। एरा मेडिकल कॉलेज के रेडियोथेरेपी विभाग की प्रमुख डॉ. तरुणा सिंह ने बताया कि भारत में कैंसर के 80 प्रतिशत मरीज

पैलिटिव केयर के हैं। इसमें से केवल 2 फीसद को ही यह उपचार मिल पाता है। इस कार्यक्रम का मकसद लोगों को जागरूक करना है कि हॉस्पिटल में ऐसे गंभीर मरीजों की क्वालिटी ऑफ लाइफ को पैलिटिव केयर के माध्यम से बेहतर बना सकता है उन्हें स्वस्थ नहीं कर सकता है। लोगों को यह भी समझाना है कि डॉक्टर की सलाह पर परिजन घर पर भी ऐसे गंभीर मरीजों की केयर कर सकते हैं। कार्यक्रम के आयोजक

सचिव डॉ. मुस्तहसिन मालिक ने बताया कि पैलिटिव केयर में मरीजों का काफी ध्यान रखना पड़ता है, उन्हें दूसरी समस्याएं होने की भी संभावना अधिक होती है। इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को जागरूक किया गया है कि लोग कैसे अपने मरीज का ध्यान रखें।

हरिद्वार से आई डॉक्टर उषा जयसवाल ने बताया कि संगीत के माध्यम से भी पैलिटिव केयर हो सकती है। क्लासिकल संगीत और

इंस्ट्रुमेंटल म्यूजिक इसमें काफी कारगर साबित हो सकते हैं। डॉ. राकेश जयसवाल ने बताया कि आत्मबोध के माध्यम से शरीर के पांचों तत्वों को बेहतर किया जा सकता है। इसी तरह होम्योपैथ, नेचुरोपैथी, आयुर्वेद, आयुष के माध्यम से पैलिटिव केयर पर विशेषज्ञों ने अपनी बात रखी। सेमिनार का उद्घाटन एरा यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर अब्बास अली मेहदी ने किया।

# لا علاج بیماریوں میں موسیقی دے سکتی ہے راحت

## ایرا یونیورسٹی میں پیلیٹینو کیئر پر ماہرین کا اظہار خیال، ملک میں 80 فیصد کینسر کے مریضوں کی حالت سنگین



لکھنؤ (نامہ نگار) کسی مریض کو عام دواؤں سے راحت نہ مل رہی ہو، ڈاکٹر نے جواب دے دیا ہو تو ایسے میں پیلیٹینو کیئر کے ذریعہ مریض کو بہتر زندگی دی جاسکتی ہے۔ اس میں موسیقی کے ساتھ دیگر متبادل طریقہ علاج شامل ہیں۔ منگل کو ایرا یونیورسٹی میں ایراز لکھنؤ میڈیکل کالج اور کینسر ایڈ سوسائٹی کی جانب سے منعقد دو روزہ چوتھی بین الاقوامی کانفرنس آف نیشنل ایسوسی ایشن آف پیلیٹینو کیئر فار آپوش اینڈ میڈیسن میں ملک و بیرون ملک سے آئے ماہرین نے پیلیٹینو کیئر پر اپنے خیالات کا اظہار کیا۔

زیادہ ہوتا ہے۔ اس پروگرام کے ذریعہ لوگوں کو بیدار کیا گیا ہے کہ لوگ کیسے اپنے مریض کا دھیان رکھیں۔ ہری دوار سے آئیں ڈاکٹر اوشا جی سوال نے بتایا کہ موسیقی کے ذریعہ سے بھی پیلیٹینو کیئر ہو سکتی ہے۔ کلاسیکل موسیقی اور انسٹرومنٹل میوزک اس میں کافی کارگر ثابت ہو سکتی ہے۔ ڈاکٹر راکیش جی سوال نے بھی اپنے خیالات کا اظہار کیا۔ اسی طرح ہومیو پیتھ، نیچر و پیتھی، آیورید، آپوش کے ذریعہ پیلیٹینو کیئر پر ماہرین نے اپنے خیالات کا اظہار کیا۔ سیمینار کا افتتاح ایرا یونیورسٹی کے وائس چانسلر پروفیسر عباس علی مہدی نے کیا۔

لوگوں کو بیدار کرنا ہے کہ اسپتال میں ایسے سنگین مریضوں کی کوالٹی آف لائف کو پیلیٹینو کیئر کے ذریعہ بہتر بنا سکتا ہے انہیں صحت مند نہیں کر سکتا ہے۔ لوگوں کو یہ بھی سمجھنا ہے کہ ڈاکٹر کی صلاح پر گھر والے گھر پر بھی ایسے سنگین مریضوں کی کیئر کر سکتے ہیں۔ پروگرام کے آرگنائزنگ سکریٹری ڈاکٹر مہحسن ملک نے بتایا کہ پیلیٹینو کیئر میں مریضوں کا کافی دھیان رکھنا پڑتا ہے۔ انہیں دوسرے مسائل ہونے کا بھی امکان

میں اصلاح کی جاسکتی ہے۔ ایرا یونیورسٹی کے ایڈیشنل ڈائریکٹر ضلعی خاں نے کہا کہ مریض کے جسم کے تغذیہ والے اجزاء کی کمی کا پتہ لگا کر اس کی تلافی کرنے سے بیماریوں میں راحت مل سکتی ہے۔ ایرا میڈیکل کالج کے ریڈیو تھریپی شعبہ کی ایچ او ڈی ڈاکٹر ترنا سنگھ نے بتایا کہ ہندوستان میں کینسر کے 80 فیصد مریض پیلیٹینو کیئر کے ہیں۔ ان میں سے صرف 2 فیصد ہی یہ علاج مل پاتا ہے۔ اس پروگرام کا مقصد

پروگرام میں آئے ساسے یونیورسٹی تمکر کرنا تک کے وائس چانسلر ڈاکٹر کے بی لنگے گوڑا نے بتایا کہ جن مریضوں کے علاج میں انگریزی دواؤں کا کردار ختم ہو جائے ان کو اسپتال میں بلا وجہ بھرنی کر کے اسپتال پر بوجھ بڑھانے کے بجائے سیلف کیئر سے بھی مریض کی زندگی کے معیار